कोई समय आवेगा जो फुल साईज़ 9×6 या 6×4 चित्र सभी अच्छे तरह लगे हुये होंगे। अभी तो मकान किराया पर लेना पड़ता है आगे चल कर गवर्मेन्ट आपे ही बड़े2 माकन देंगे। कालेज यह भी बन जावेंगे। क्योंकि मुख्य है चरित्र। आसुरी चरित्र और देवी चरित्र। बच्चे समझते हैं सच्च2 हम आसुरी गुण वाले थे। अभी जानते हैं देवी राज्य स्थापन हो रही है। आसुरी गुणों और देवी गुणों का बेहद का नाटक बना हुआ है। बाप बहुत सहज बताते हैं। बाप की पहचान भी नहीं है। सृष्टि चक्र अर्थात रचना की भी पहचान नहीं है। शिव बाबा बैठ बच्चों को बेहद की हिस्ट्री-जागराफी बताते हैं। जिसमानी हिस्ट्री जागराफी तो बच्चों को पढ़ी हुई है। बाप वह नहीं समझाते हैं। वह तो सभी जानते हैं। यह रथ भी जानते है। यह है नई बात। जो कोई नहीं समझाते हैं। तुम आधा कल्प पढ़ते आये हो। सतोप्रधान हिस्ट्री जागराफी बाप ही बताते हैं। बच्चे जानते हैं बरोबर हम देवी सम्प्रदाय के थे। फिर आसुरी सम्प्रदाय के हम बने हैं। हम सो ब्राह्मण ही फिर देवता बनेंगे। फिर क्षत्री ... फिर ब्राह्मण बनेंगे। बाबा देवता बनावेंगे। यह चक्र याद करते रहने से तुम्हारे विकर्म विनाश होते रहेंगे। परन्तु यह याद ही माया भूलाती है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अभूल बनते जावेंगे। वैसे भविष्य पद पावेंगे। बाप को ही याद करना है। बाप का बनने से ही वरसा पावेंगे। हर 5000 वर्ष बाद रावण पतित बनाती है। फिर बाप आकर पावन बनाते हैं। इसको रावण राज्य, उसको रामराज्य कहा जाता है। रामराज्य अर्थात ईश्वरीय राज्य। कहां भी बच्चे भुंझते हों तो बाप से पूछ सकते हो। तुम पूज्य थे फिर पुजारी फिर पूज्य। सतोप्रधान बाबा कैसे बनेंगे? बाप कहते हैं मामेकं याद करते2 अन्त मते सो गति हो जावेगी। अपन को आत्मा समझ बाप को बाप से वरसा लेना है। पहले हम आत्मा हैं' बाप समझाते हैं हम आत्मा हैं यह हमारा शरीर है। शरीर बड़ा होता है तो आत्मा को ज्ञान है अभी यह छोड़ दूसरा नया लेना है। यहां वह ज्ञान नहीं है। यह है श्रीमत। देवता बनने की श्रीमत मिलती है। ऊंच ते ऊंच भगवान है ना। कल्प2 तुमको यह बातें बाप समझाते हैं' यह तो समझते हो देवताएं किसके माला हैं? प्रजापिता ब्रह्मा के। वह रुद्र माला सारी दुनिया का है। फिर हरेक धर्म की अलग माला। देवी-देवताओं की अलग माला। उनका बड़ा प्रजापिता ब्रह्मा। इस्लामी का इब्राहीम। बौधियों का बुधा। आदी सातन देवी देवता धर्म किसने रचा? कोई है नहीं। अपने धर्म को भूल धर्मभ्रष्ट कर्म भ्रष्ट हो गये हैं। भ्रष्ट ते भ्रष्ट बन पड़े हैं इसलिए अपन को हिन्दु कह देते हैं। वायसलेस वर्ल्ड में था एक धर्म। विषस वर्ल्ड में अनेकानेक धर्म। धर्म वृधि को पाते2 कि ने धर्म हो गये हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना शंकर द्वारा विनाश। यह तो सहज है ना। ब्रह्मा द्वारा एक धर्म की स्थापना शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश। दिन-प्रति-दिन नाम बाला हो ता जावेगा। पहले गरीब फिर नाम जब होगा तो शाहुकार आवेंगे फिर जब बहुत शाहुकार आ जावेंगे फिर सन्यास। सभी के मुख से निकलेगा यह तो वन्डरफुल लीला है। इनके आदि-मध्य-अन्त को ई भी नहीं जानते। बाप बच्चों को पहचान दी है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 30-6-68 :- बच्चे जानते हैं 63 जन्म रहे हैं रावण राज्य में। अभी यह है अन्तिम जन्म। अभी बदली होती है रामराज्य में। फिर रामराज्य से रावणराज्य में भी ऐसे ही बदली होते हैं। वहां है गिरने की बात, यहां है चढ़ने का बात। यह नालेज है हम रावण राज्य में गिरे कैसे हैं। अनायास ही रावण राज्य में गये अर्थात पतित हो पड़े। यह भी बच्चों को मालूम पड़ा है। तिथ तारीख का भी मालूम पड़ा है। अभी यह है चढ़ने की बात। चढ़ना है एक जन्म में। और कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ याद करना है। यहां बैठ याद करते हो। बच्चों को स्वतंत्रता है घूमते-फिरते याद कर सकते हो कितना भी पैदल करो याद में कोई थकवाट नहीं होगी। घूमने का घूमना याद की याद। दो घंटा सुबह शाम को घूमने जाओ वह तो याद के लिए बहुत ही सहज है। सारा दिन ज्ञान और योग। यहां और धंधा ही नहीं। बाहर घर में यह फुर्सत नहीं। यहां तो कोई फिकरात नहीं। खान-पान पकाने करने का भी फुर्सा नहीं। यहां बहुत अच्छा रिफ्रेश हो सकते हैं बच्चे। बाप

30.6.68 198

2

समझाते हैं वृध अवस्था वाले को भी तकलीफ नहीं। सिर्फ अपन को आत्मा समझो। मैं आत्मा हूं। जैसे वह कहते हैं अल्ला हूं अल्ला हूं। तुम यह पक्का करो। आत्मा में ही संस्कार भरतो हू। इसमें देवीगुण भी चाहिए। बहुत मीठा बनना होता है। आदत पड़ जाती है। हर बात में अपन को मीठा बनाते रहो। और थोड़ा बोलना। ज्यादा बोलने कोदरकार नहीं। भक्ति-मार्ग मे सारा दिन टांटा करते गीत गाते रहते हैं। बाबा गीत आद पसन्द नहीं करते। गीता तो भक्ति मार्ग में बहुत गाये, टाईम वेस्ट होता गया। गीत सीखने से याद में रहना अच्छा है। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। गीत बनाने से विकर्म विनाश नहीं होते हैं। और यहां बोलने की दरकार नहीं। घर में बात करो वह भी बड़ी सूक्ष्म। ऐसे= आदत पड़ जानी चाहिए। दो बोले तो तीसरा न बोले। आवाज़ न हो। शुद्धता बहुत अच्छी चाहिए तुम बच्चों में। हरेक बात में शुद्धता। यहां बहुत बच्चे आते हैं इसलिए शान्ति नहीं हो सकती। घर में तो दो -चार रहते हैं। शान्ति होंगी तो सभी कहेंगे यहां तो बहुत शान्ति है। कोई वहां से पास करेंगे तोशान्ति का प्रभाव पड़ेगा। तुम शान्ति सीखते हो। कैसे अशरीरी हो बैठे। शरीर से अलग हो जावें। शरीर से अलग हो जावें। फिर शरीर छोड़कर चले जावेंगे। शरीर में महत्व न होना चाहिए। बिमारी आद होती है यह हिसाब-किताब चुकुत होता है। फिर आधा कल्प यह कुछ होगा नहीं। खुशी ही बिमारी को हप कर देंगी। मुख मलीन न होना चाहिए बिमारी में। हर्षितमुख। शरीर छोड़े तो भी समझे यह तो मुस्करा रहा है। पिछाड़ी में मुस्कराहट रहेंगी। हम जाते हैं शान्तिधाम फिरसुखधाम आवेंगे। सदैव यह मुस्कराहट रहे। गुप्त खुशी रहती है। तो हर्षित मुख चाहिए। मुरझाया हुआ मुख न हो। तुम बच्चों को तो बहुत2 ऊंच पद मिलता है बाप से। यह नई बात भी नहीं। कल्प2 बाबा वरसा देते हैं। अभी बाकी थोड़ा समय है। बाप कहते हैं 63 जन्म विकारों में गिरे हो। अभी एक जन्म न गिरे तो क्या। देवता बनने लिए पवित्र क्यों नहीं बनते हो। अपवित्रता का ख्याल भी नहीं उठना चाहिए। अभी तो बाप से बादशाही लेना है। मायावी ख्यालात को उड़ा देना चाहिए। लड्डू न बनना है। पासलेट लड्डू भी नहीं। फीके लड्डू भी नहीं बनना चाहिए। हाथ तब चलता है जब शरीर पर दृष्टि पड़ती है। कोई भी ख्यालात न आये तब यहल0ना0 बनेंगे। हम पढ़ते हैं नई दुनिया विश्व का मालिक बनने। हम प्रिन्स बनेंगे इस निश्चय में रहो। हम प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे। बच्चों को बहुत2 खुशी चाहिए। यहां कुछ भी जेवर आद नहीं। फुर्णा नही। जेवर भल वहां ही रखकर आओ। यहां फुर्णा न रहे कोई भी। कोई चीज़ होगी तोयाद पड़ेगी। न होंगी तो याद भी नहीं पड़ेगी। फुली पहनते= पहनते हैं यह भी निभाग की निशानी है। न कि सुहाग की। यह पहनने से ही निभाग शुरू होता है। न थी तो कुमारी थी, सौभाग्यवती थी। बच्चे समझते हैं भारत अभी 100% निभागा है। मनुष्यों को थोड़े ही पता है हमारे पर हमारे पर राहू की दशा है। तुमको याद है हम वृहस्पत की दशा में थे हम मालिक थे। अभी कंगाल बन पड़े हैं। राहू की दशा। अभी फिर वृहस्पत की दशा बैठता है। कोशिश करनी चाहिए वृहस्पतो की दशा की। शुभ रेस करनी चाहिए इन जैसा भविष्य में बनुंगा। जो बहुत सर्विस करते हैं वही माला का दाना बनते हैं। तो हम भी क्यों नही उस में लग जावें। माताओं को तो बहुत खड़ा होना चाहिए। अपने साथियों को भी संदेश सुनाना है। आस पास वाले झट भागेंगे। आओ सेकण्ड में विश्व की बादशाही कैसे मिलती है हम समझावें। सेकण्ड में जीवनमुक्ति। तुम्हारे सिवाय कोई भी दो बाप का राज़ बता न सके। एक हद का वरसा देते हैं एक बेहद का। कब किसकी बुधि में भी न होगा यह दो बाप की बहुत बात है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। विश्व का मालिक बन जावेंगे। तुम बहुतों की सर्विस घर बैठे कर सकती हो। घर बैठे2 यात्रा करा सकती हो। वह ब्राह्मण धक्का खिलाते हैं। सभी की बुधि का ताला खोलने का है। आगे चलते जाओ। बहुत अच्छा है जो कुछ भी नहीं पढ़ी हो। न शास्त्र काम आवेंगे न नावेल ही काम में आवेंगी। एक ही बाप की शिक्षा काम आवेंगी। इसका वजन बहुत भारी है। तुम जानते हो बेहद का बाप मिला है तो कांटे से फूल बन जाना चाहिए। इतनी खुशी होनी चाहिए। माया के राज्य में तो कर्म= बकरियां रिढ बन जाते हैं। यहां तो महावीरणी बननी है। बाप

30/6/68

को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाये। जितना याद करेंगे महावीरणी बनेंगे। महावीर वह जो बाप को याद करे। ऐसे नहीं कहे भूल जाते हैं। माया को उड़ा देना है। कितना भी माया हैरान करे। जितना चाहिए माथा मारो। हम तो अपने बाप से वरसा लेंगे। बाबा और कुछ भी मेहनत नहीं देते हैं। खाओ-पीओ, बच्चे आद को दूध पिलाओ जो चाहिए सो करो याद करो बाप को। पहले सबक सीखो मैं आत्मा हूं। तो बाप भी याद आ जावेगा। यह याद ही साथ चलेगी। नालेज साथ नहीं चलेगी। वहां भूल जावेंगे। फिर तुम्हारे रिकार्ड में राजधानी भोगने का पार्ट है। नालेज यहां की यहां ही रह जावेगी। यहां कहा जाता है बीती को चितवो नहीं। हर बात में खुशी ही होनी चाहिए। पेट के लिए भी इतना जास्ती नहीं करना चाहिए। पेट क्या दो रोटी मांगता है। इससे तो हम अपने बाप को याद करें। वह अच्छा है। जास्ती पैसे की दरकार नहीं। तुम माताओं का तो पैसा चाहिए नहीं। तुम प्रि हो। बैज तुम्हारा निशानी है। लज्जा न करो पहनने की। घड़ा होगा झट किसको भी समझावेंगे। यह बेहद का बाप है। भगवान आते हैं जरूर। यह बाबा है इन दवारा यह पद दे रहे हैं। सभी को पैगाम देते रहो। ट्रेन में भी तुम सभी को पैगाम दो। ऐसे सर्विस करो तब तुमको खुशी भी हो। कुमारियों के लिए तो सहज है। ट्रेन भी चढ़ें हो तो फिर उतरो फिर दूसरे डब्बे में। हमारा भारत कितना शाहुकार था। हम क्या थे। अभी समझते हो जब बाप मिला है। माया ने कितना नीचे गिराया है। बहुत धोखा दिया है। सुनाने वाला भी आत्मा है तो सुनने वाली भी आत्मा है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 1-7-68 :- बच्चे समझते हैं हमारे सभी दुःख दूर होने वाले हैं। क्योंकि बेहद का बाप मिला है तो सभी मनुष्योंके दुःख दूर हो जाते। देवतायें तो है ही सुखधाम के मालिक। बाकी थोड़ा समय है। याद की यात्रा में कमजोर हैं। जितना हो सके बाप को याद करना है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हर्षित रहते हैं। जितना बाप को याद कर वरसे को याद करते हैं उतना ही दिल में खुशी होती है। यह भी बच्चा है ना। तो जो इनके संबंधी होंगे वा प्रजा सभी खुश। यथा राजा-रानी तथा प्रजा। एवर हैपी बनते हैं ना। मातायें तो और ही खुश होती हैं। माताओं को पहले पुरुषों को पीछे रखते हैं। ल० बनना है तो भी एक बात, ना० बनना है तो भी एक बात और ही माताओं का जास्ती मान है। पहले ल० पीछे ना०। तुम पुराने आशुक हो मुझे माशुक के। याद करते हो वर्सा पाने के लिए। तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद बाबा आते हैं विश्व का मालिक बनाने। यह जो नालेज मिलती है वह फिर इमर्ज हो जाती है। फिर चक्र फिरता रहेगा। जो होता है रोल होता जाता है। यह सभी समझने की बातें हैं। कितना बड़ा बेहद का रोल है। इसको कुदरत ही कहेंगे। किसकी बुद्धि में नहीं बैठता है। अभी तुम बच्चों की सभी मनोकामनायें पूरी होती हैं। पवित्र आत्मा बन जाते हो। बाप सभी बच्चों को तृप्त कर देते हैं। तो इसमें खुशी होनी चाहिए। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। अभी तो अजन तमोप्रधान से तमो में आये हैं। तमोप्रधान खत्म हो गया जब ब्राहमण बने फिर है तमो · · · सतो में आना। सतोप्रधान तक पहुंचना जरूर है। हरेक बच्चे जानते हैं हम सतो० थे फिर कैसे सीढ़ी उतरे। अभी जितना सतोप्रधान बनते जावेंगे फिर अमरपुरी में आ जावेंगे। 5000 वर्ष पहले अमरपुरी थी। तो अभी पुरुषार्थ करना है। बीच में माया की लड़ाई भी है। बच्चों को सदैव हर्षित रहना चाहिए। बाप को देख रोमांच खड़ी हो जानी चाहिए। माताओं को तो और ही जास्ती। कुछ भी न पढ़े हो। कोई भूसा न हैतो अच्छा है। बाकी यह तो समझते हो हम आत्मा हैं। हमारा बाप परमात्मा है। यह तो बहुत सहज है। बस बाप को याद करो। एक बार चक्र को समझो फिर विलायत जाओ। दैवीगुण धारण करनी है। भोजन किसके हाथ का मिलता है कोई हर्जा नहीं है। यादके बल से तुम बियब को पवित्र बनाते हो। यह भोजन क्या चीज़ है। बाबा से पूछते रहो। नहीं तो कोई इनसल्ट फील करते हैं। तो ऐसा काम न करना चा०

यह तो पक्का है बाप समझाते हैं न कि दादा। यह भी समझता है। इनके लिए ही बाप समझाते हैं यह भी समझता है। उनके लिए ही बाप समझाते हैं। इनके बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश करता हूं। स्थ चाहिए ना। शिव बाबा को याद कर मिलना है भाषी पहनना है। यह भी रिवाज निकल जावेगा। फिर बच्चे हो जावेंगे। आगे चल क्या होता है देखना। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।